विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, भाद्रपद पूर्णिमा, 19 सितंबर, 2013 वर्ष 43 अंक 3

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यस्सिन्द्रियानि समथङ्गतानि, अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता।
पहीनमानस्स अनासवस्स, देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो॥
धम्मपद- ९४, अरहन्तवग्गो.

सारथि द्वारा सुदांत (सुशिक्षित) घोड़ों के समान जिसकी इंद्रियां शांत हो गयी हैं, जिसका अभिमान विगलित हो गया है, जो आश्रवरहित है, देवगण भी वैसे (व्यक्ति) की स्पृहा करते हैं।

धर्म-संदेश

अगस्त में छपा **'महाभारत'** का लेख मेरे निजी सचिव ने लिखा। क्योंकि यह विपश्यना विशोधन विन्यास के शोधों के अनुसार था इसलिए इसमें मेरा नाम देने में कोई दोष नहीं देखा। यह भूल अवश्य हुई कि यह लेख पत्रिका में छपने लायक नहीं था। **अच्छाइयों को अच्छाई के रूप में स्वीकार करें और बुराई को बुराई के रूप में देख कर, उनसे दूर रहें। यही शुद्ध धर्म का संदेश है।**

सप्रेम साशिष,
सत्यनारायण गोयन्का

रतनत्तय

बुद्धो

इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिस-दम्म-सारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। *– दी. नि. १.४४, सामञ्ञफलसुत्तं*

– ऐसे ही तो हैं वे भगवान! अरहंत, सम्यक-सम्बुद्ध, विद्या तथा सदाचरण से सम्पन्न, उत्तम गति प्राप्त, समस्त लोकों के ज्ञाता, सर्वश्रेष्ठ, (पथ-भ्रष्ट घोड़ों की तरह)- भटके लोगों को सही मार्ग पर ले आने वाले सारथी, देवताओं और मनुष्यों के शास्ता (आचार्य), बुद्ध, भगवान।

धम्मो

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति।
– दी. नि. २.७३, महापरिनिब्बानसुत्तं

– भगवान द्वारा भली प्रकार आख्यात किया गया यह धर्म, संदृष्टिक है काल्पनिक नहीं, प्रत्यक्ष है, तत्काल फलदायक है, आओ और देखो (कहलाने योग्य है), निर्वाण तक ले जाने योग्य है, प्रत्येक समझदार व्यक्ति के साक्षात करने योग्य है।

सङ्घो

सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसङ्घो, आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।
– दी. नि. २.७३, महापरिनिब्बानसुत्तं

– सुमार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, ऋजु मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, न्याय (सत्य) मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, उचित मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, यह जो (मार्ग-फल प्राप्त आर्य) व्यक्तियों के चार जोड़े हैं यानी आठ पुरुष-पुद्गल हैं – यही भगवान का श्रावक संघ है, (यही) आवाहन करने योग्य है, पाहुना बनाने (आतिथ्य) योग्य है, दक्षिणा देने योग्य है, अंजलि-बद्ध (प्रणाम) किये जाने योग्य है। लोगों का यही श्रेष्ठतम पुण्य क्षेत्र है।

वन्दना

ये च बुद्धा अतीता च, ये च बुद्धा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये बुद्धा, अहं वन्दामि सब्बदा॥१॥

– अतीत काल में जितने भी बुद्ध हुए हैं, अनागत काल में जितने भी बुद्ध होंगे, वर्तमान काल में जितने भी बुद्ध हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं॥१॥

ये च धम्मा अतीता च, ये च धम्मा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये धम्मा, अहं वन्दामि सब्बदा॥२॥

– अतीत काल के जो भी धर्म हैं, अनागत काल में जो भी धर्म होंगे, वर्तमान काल के जो भी धर्म हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं॥२॥

ये च सङ्घा अतीता च, ये च सङ्घा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये सङ्घा, अहं वन्दामि सब्बदा॥३॥

– अतीत काल में जो भी आर्य-संघ हुए हैं, अनागत काल में जो भी आर्य-संघ होंगे, वर्तमान काल में जो भी आर्य-संघ हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं॥३॥

यो सन्निसिन्नो वरं बोधिमूले,
मारं ससेनं महतिं विजेत्वा।
सम्बोधिमधिगच्छि अनन्तञाणो,
लोकोत्तमो तं पणमामि बुद्धं॥४॥

– जिन्होंने श्रेष्ठ बोधिवृक्ष के नीचे (ध्यानस्थ) बैठ कर, महती सेना सहित मार को पराजित कर सम्बोधि प्राप्त की, उन अनंतज्ञानी सर्व लोकों में श्रेष्ठ (भगवान) बुद्ध को मैं प्रणाम करता हूं॥४॥

अट्ठङ्गिको अरियपथो जनानं,
मोक्खप्पवेसो उजुकोव मग्गो।
धम्मो अयं सन्तिकरो पणीतो,
निय्यानिको तं पणमामि धम्मं॥५॥

– यह जो लोगों के उपयुक्त आर्य अष्टांगिक मार्ग है, जो कि मोक्ष प्राप्ति के लिए सीधा सरल मार्ग है, यह जो शांतिदायक, उत्तम धर्म है और यह जो निर्वाण की ओर ले जाने वाला है, ऐसे सद्धर्म को मैं प्रणाम करता हूं॥५॥

सङ्घो विसुद्धो वरदक्खिणेय्यो,
सन्तिन्द्रियो सब्बमलप्पहीनो।
गुणेहि-नेकेहि समिद्धिपत्तो,
अनासवो तं पणमामि सङ्घं॥६॥ *– श्रामणेर-विनय*

– यह जो विशुद्ध, श्रेष्ठ, दक्षिणा देने योग्य, शांत-इंद्रिय, समस्त मलों से विमुक्त, अनेक निष्पाप गुणों से समृद्ध, आश्रवहीन (भिक्षु) संघ है – ऐसे (आर्य) संघ को मैं प्रणाम करता हूं॥६॥

आरद्धविरिये पहितत्ते, निच्चं दळ्ह-परक्कमे।
समग्गे सावके पस्स, एतं बुद्धानवन्दनं॥७॥
– सं. नि. अट्ठ. २.२.४५, दसबलसुत्तवण्णना

– संकल्प युक्त प्रयत्नशील (निर्वाण के लिए) नित्य दृढ़ पराक्रम में संलग्न (इन) एकत्रीभूत श्रावकों को देखो। यही बुद्धों की वंदना है॥७॥

इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया धम्मं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया सङ्घं पूजेमि॥८॥

– सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं **बुद्ध** की पूजा करता हूं। सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं **धर्म** की पूजा करता हूं। सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं **सङ्घ** की पूजा करता हूं॥८॥

अद्धा इमाय पटिपत्तिया जाति-जरा-मरण्म्हा परिमुच्चिस्सामि॥९॥
– श्रामणेर-विनय

– इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं निश्चय ही जन्म, जरा और मृत्यु से मुक्त हो जाऊंगा॥९॥

देव-आह्वानसुत्त

समन्ता चक्कवालेसु, अत्रागच्छन्तु देवता।
सद्धम्मं मुनिराजस्स, सुणन्तु सग्ग-मोक्खदं॥

– समस्त चक्रवालों के निवासी देवगण! यहां आएं और मुनिराज भगवान बुद्ध के स्वर्ग तथा मोक्षप्रदायक सद्धर्म को श्रवण करें!

धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता!
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता!
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता!!

– धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!
– धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!
– धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!

ये सन्ता सन्तचित्ता, तिसरण-सरणा, एत्थ लोकन्तरे वा।
भुम्माभुम्मा च देवा, गुण-गण-गहणा, ब्यावटा सब्बकालं॥

– जो शांत स्वभाव और शांत चित्त हैं, त्रिशरण शरणागत हैं, इस लोक एवं अन्य लोकों में रहने वाले हैं, भूमि पर एवं आकाश में रहने वाले हैं, जो सर्वदा गुणों को ग्रहण करने में ही रत हैं,

एते आयन्तु देवा, वर-कनक-मये, मेरुराजे वसन्तो।
सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं, सोतुमग्गं समग्गा॥
– श्रामणेर-विनय

– श्रेष्ठ स्वर्णमय सुमेरु पर्वतराज पर रहने वाले ये सभी उपस्थित देवता संतोष के लिए मुनिश्रेष्ठ के श्रेष्ठ वचन को सुनने के लिए एक साथ आयें।

उग्घोसन-गाथा

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा नागगणा महेसिनो॥१॥

– (जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब) बोधिमंड पर प्रमुदित **नागों** ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की – "श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है। पापी मार की पराजय हो गयी है॥१॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा सुपण्णगणा महेसिनो॥२॥

– (जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब) बोधिमंड पर प्रमुदित **गरुड़ों** ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की – "श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है। पापी मार की पराजय हो गयी है॥२॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा देवगणा महेसिनो॥३॥

– (जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब) बोधिमंड पर प्रमुदित **देवताओं** ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की – "श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है। पापी मार की पराजय हो गयी है॥३॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा ब्रह्मगणा महेसिनो॥४॥
– अप. अट्ठ. १.८७-८८, अविदूरेनिदानकथा;

– जा. अट्ठ. १.८४, अविदूरेनिदानकथा;
– नमक्कार टीका - बर्मीज पृ. ५०

– (जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब) बोधिमंड पर प्रमुदित **ब्रह्माओं** ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की – "श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है। पापी मार की पराजय हो गयी है॥४॥

उदान-गाथा

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा,
यतो पजानाति सहेतुधम्मं॥१॥

– जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह प्रत्ययों सहित धर्म को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं॥१॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा,
यतो खयं पच्चयानं अवेदी॥२॥

– जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह प्रत्ययों के निरोध-क्षय होने को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं॥२॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
विधूपयं तिट्ठति मारसेनं,
सुरियोव ओभासयमन्तलिक्खं॥३॥

– उदा. ६९-७१, पठमदुतियततियबोधिसुत्तं
– महाव. २-३, बोधिकथा

– जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह मार-सेना का विध्वंस कर वैसे ही स्थित होता है जैसे कि अंधकार को विध्वंस कर अंतरिक्ष में सूर्य प्रकाशमान होता है॥३॥

अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥४॥

– अनेक जन्मों तक बिना रुके संसार में दौड़ता रहा। (इस कायारूपी) घर बनाने वाले की खोज करते हुए पुनः पुनः दुःखमय जन्म में पड़ता रहा॥४॥

गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खितं।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा'ति॥५॥

– ध. प. १५३-१५४, जरावग्गो

– हे गृहकारक! अब तू देख लिया गया है! अब तू पुनः घर नहीं बना सकेगा! तेरी सारी कड़ियां भग्न हो गयी हैं। घर का शिखर भी विशृंखलित हो गया है। चित्त संस्कार-रहित हो गया है, तृष्णा का समूल नाश हो गया है॥५॥

सब का मंगल हो!

धम्मबोधि पर दीर्घकालिक सेवा का सुअवसर

'धम्मबोधि' अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना केंद्र, बोधगया पर कम से कम एक वर्ष तक सेवा देने के लिए निम्न पदों हेतु धर्मसेवकों की आवश्यकता है।

१- निर्माणकार्य की गतिविधियां
२- रख-रखाव के लिए-- इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, पेंटर, गार्डनर और हाउसकीपर.
३- अकाउंटेट, ४- खरीद-दारी, ५- गोदाम की देख-रेख,
६- शिविर-कार्यालय वाहक (व्यवस्थापक)

जो भी कार्यकुशल व्यक्ति चाहें, भगवान बुद्ध के **संबोधि-स्थल-परिसर** में सेवा देने के स्वार्णावसर का लाभ उठा सकते हैं। अधिक जानकारी और सेवा के लिए संपर्क करें-- SMS-- +91 98281 95950. **या** Email- bikram.dandiya@gmail.com;

ग्लोबल विपश्यना पगोडा हेतु कार्पस फंड

ग्लोबल पगोडा के निर्बाध संचालन हेतु एक कार्पस फंड एकत्र किया जा रहा है ताकि भविष्य में इसका रख-रखाव बिना किसी बाहरी दबाव के सफलतापूर्वक होता रहे और म्यंमा में सद्धर्म को सुरक्षित रखने तथा भारत वापस भेजने के लिए सयाजी ऊ बा खिन और म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का यह **अद्भुत पावन प्रतीक** हजारों वर्षों तक कायम रहे। इस **कार्पस फंड** का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं कर सकता, बल्कि सरकारी बैंक में जमा इस धन के ब्याज से पगोडा का दैनिक व्यय और रख-रखाव संबंधी कार्य पगोडा-संरक्षण के नियमानुसार होता रहेगा। दान भेजने हेतु विवरण इस प्रकार है:--

१. भारत में कोर बैंकिग के द्वारा **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन** को दान भेजने के लिए भारत की किसी भी **बैंक ऑफ इंडिया** की शाखा से पैसे भेज सकते हैं। विवरण निम्न प्रकार है--

"Global Vipassana Foundation"
'Axis Bank India', A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062, IFS CODE: UTIB0000062
MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch, Mumbai-400064.

२. भारत के बाहर से दान भेजने वालों के लिए विवरण निम्न प्रकार है-- **(SWIFT transfer to 'Bank of India')**
SWIFT Transfer details are as follows:
"Global Vipassana Foundation"
Bank : **"J P Morgan Chase Bank"**
Address : New York, US,
A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33.

चेक/ड्राफ्ट कृपया निम्न पते पर प्रेषित करें:--

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, रजि. ऑफिस-- ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई- 400023. *फोन-* **022-22665926**.

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

शरद पूर्णिमा के अवसर पर पूज्य गुरुदेव एवं माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

20 अक्टूबर, 2013, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।** बुकिंग संपर्क: फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

विपश्यना विशोधन विन्यास को मुंबई विश्वविद्यालय की मान्यता

मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा विपश्यना विशोधन विन्यास को पालि में एम. ए. एवं पी-एच. डी. छात्रों को मार्गदर्शन करने के केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी है। शोध द्वारा पालि में एम. ए. तथा पी-एच. डी. करने के लिए योग्य छात्र **विपश्यना विशोधन विन्यास** (वी.आर.आय.), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, मुंबई में आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए संपर्क करें--
ईमेल: <s_sanghvi@hotmail.com>

नव नियुक्तिया

सहायक आचार्य

१. श्री बाबूराव मगदूम, शिरोळ
२. श्री पी.ए. नीलकंठन, चेन्नई
3. Mrs Poy-Twee Leow, Malaysia
4. Ms. Christine Herz, Germany
5. Mr. Greg & Mrs. Elyena Lundh, Canada
6. Ms. Beth Wycoff, USA
7. Ms. Judy Kendall, UK

बालशिविर शिक्षक

१-२. श्री महेश एवं श्रीमती मनीषा लाडे, जळगांव
३-४. श्री संग्राम एवं श्रीमती नूपुर पाटील, जळगांव
५. श्रीमती ललिता चौधरी, जळगांव
६. श्रीमती शैलजा भिरुड, जळगांव
७. श्री मनसाराम मोराने, जळगांव
८. श्री रूपेश मोरे, जळगांव
९. श्री प्रकाश गेडाम, भोपाल
१०. श्रीमती अलका झंवर, ग्वालियर
11. Mr. Zuo Zhao Wu, China
12. Ms. Yu Mei Sun, China
13. Mrs. Ikewati Seewarno, Indonesia

निम्न टीवी चैनलों पर पूज्य गुरुदेव के प्रवचन

1. **UTV World Movies**-- 3:40 am to 4:38 am (English)
2. **UTV Stars** -- 3:30 am to 5:30 am
3. **UTV Bindass** -- 3:00 am to 3:30 am
4. **UTV Action** -- 4:11 am to 5:30 am

दोहे धर्म के

नमस्कार अरहंत को, नमस्कार सब संत।
नमस्कार जननी जनक, है उपकार अनंत॥
नमस्कार इस विश्व के, देव ब्रह्म भगवान।
धर्म-निष्ठ हों जो सदा, करें जगत कल्याण॥
इस श्रद्धा-युत नमन से, चित्त विमल हो जाय।
अहं भाव सब दूर हों, विनय भाव भर जाय॥
अपनी रक्षा आप कर, छोड़ परायी आस।
जो तू निज रक्षा करे, देव ब्रह्म सब पास॥
धरती और आकाश के, आओ सम्यक देव।
जन जन में बांटें धरम, सुख फैले स्वयमेव॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जीवन मँह जागै धरम, मिटज्या पाप समूळ।
तो हो ज्यावै आप ही, देव सभी अनुकूल॥
जीवन भर भटकत फिर्‌यो, देवां रै दरबार।
देव बिचारा के करै? अपणों करम सुधार॥
धरम सार समझ्यो नहीं, पड़ देवां रै लार।
देव बिचारा के करै, अपणों करम सुधार॥
दरसण होग्या देव रा, परसण होग्यो मूढ।
मन रो ही प्रक्छेप है, बात न समझी गूढ॥
चलै धरम रै पंथ पर, रंच करै ना भूल।
तो सै देवी देवता, हो ज्यावै अनुकूल॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, भाद्रपद पूर्णिमा, 19 सितंबर, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org